International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 8 Issue 2, March-April, 2020, Impact Factor: 5.246

कार्य-विश्लेषण

(Task Analysis)

Dr. Prem Prakash Pandey

Principal, D.A.V. College of Education, Hassangarh, Rohtak, Haryana

----------**********----------

कार्य विश्लेषण का अर्थ-

यह दो शब्द के मेल से बना है जिसका इसमें एक है कार्य और दूसरा है विश्लेषण। कार्य का अर्थ किसी भी पाठ्यवस्तु के शिक्षण में उपलब्धि की इकाई है जो कि सामूहिक रूप से क्रियान्वयन कहलाता है। विश्लेषण का अर्थ है छोटे-छोटे भागों में बांटना। कार्य विश्लेषण का संप्रत्यय Rayle ने प्रदान किया है। यह संप्रत्यय शिक्षण तथा प्रशिक्षण कार्यक्रमों के विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध हो रहा है। कार्य विश्लेषण के माध्यम से ही एक शिक्षक सीखने के उद्देश्यों, शिक्षण नीतियों तथा शिक्षण युक्तियों के संबंध में सही निर्णय लेने में समर्थ होता है। कार्य विश्लेषण के अंतर्गत विश्लेषण के साथ-साथ संश्लेषण की क्रिया भी सम्मिलित होती है। कार्य विश्लेषण में कार्य विश्लेषण करने के पश्चात शिक्षक संश्लेषण द्वारा निश्चित निष्कर्ष पर पहुँच कर सही निर्णय ले लेता है कि उसे क्या पढ़ाना है? क्यों पढ़ाना है? कैसे पढ़ाना है? कितनी गहराई तक पढ़ाना है? तथा किन किन युक्तियों का प्रयोग करना है।

डेविस ने कार्य विश्लेषण की चार प्रमुख विशेषताएं बतलाई है-

- छात्रों के सीखने की क्रियाओं का विवरण दिया जाता है।
- अपेक्षित व्यवहारों की पहचान की जाती है।
- उन उद्दीपनों तथा परिस्थितियों को पहचाना जाता है जिनके द्वारा छात्र अपेक्षित व्यवहार करते हैं।
- वांछित व्यवहार परिवर्तन के लिए लक्ष्यों, युक्तियों, कौशलों तथा व्यूह रचनाओं के संबंध में निर्णय लिया जाता है इनमें कौन सा उपयुक्त है।

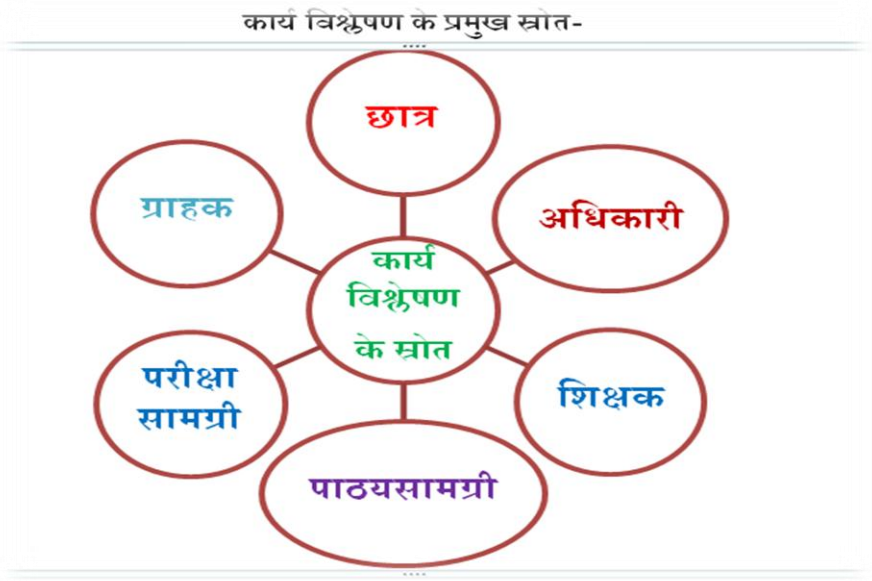

कार्य विश्लेषण के प्रकार-

कार्य विश्लेषण सामान्यत: तीन प्रकार से किया जाता है।

- पाठ्यवस्तु या प्रसंग विश्लेषण (Content or Topic Analysis)
- क्रिया विश्लेषण (Job Analysis)
- कौशल विश्लेषण (skill Analysis)

पाठ्यवस्तु या प्रसंग विश्लेषण (Content or Topic Analysis**)**

पाठ्यवस्तु का विश्लेषण एक निश्चित उद्देश्य के अनुसार किया जाता है जो कि प्रायः शैक्षिक तथा बौद्धिक प्रकृति का होता है। **आई के डेविस के अनुसार-** पाठ्यवस्तु विश्लेषण के अंतर्गत पाठ्यवस्तु का उसके अवयवों तथा तत्वों में विश्लेषण तर्कपूर्ण विधि से किया जाता है। तथा उसका तार्किक विधि से ही संश्लेषण भी किया जाता है। पाठ्य वस्तु विश्लेषण का मुख्य लक्ष्य शिक्षण बिंदुओं का निर्धारण करना होता है। पाठ्यवस्तु विश्लेषण में शिक्षक जिन महत्वपूर्ण बातों पर बल देता है उन्हें शिक्षण बिंदु कहा जाता है।

शिक्षण बिंदुओं का चयन करने में पाठ्यवस्तु विश्लेषण की प्रक्रिया महत्वपूर्ण योगदान देती है। शिक्षण बिंदुओं के माध्यम से शिक्षक सरलता से अपनी पाठ्यवस्तु का अधिगम छात्रों को करा सकता है। पाठ्यवस्तु विश्लेषण के द्वारा शिक्षक कुल शिक्षण बिंदुओं का चयन करके उनकी संख्या ज्ञात करता है। और इन बिंदुओं की संख्या, महत्व आदि के आधार पर पढ़ाने का समय निश्चित करता है किन शिक्षण बिंदुओं को ज्यादा समय देना है, किसको कम समय देना है किसको प्रारंभ में पढ़ाना है, किसको बीच में पढ़ाना है तथा किसको अंत में पढ़ाना है इनमें से प्रत्येक शिक्षण बिन्दुओं को कितनी गहराई तक पढ़ाना है इसका निर्णय लेता है। इस प्रकार से पाठ्यवस्तु विश्लेषण के आधार पर शिक्षक अपने शिक्षण को अधिक प्रभावशाली बना सकता है।

पाठ्यवस्तु विश्लेषण की विधियां-

वैसे तो पाठ्यवस्तु विश्लेषण की अनेक विधियां प्रचलित हैं। जिनमें डेविस की विधि सर्वाधिक सरल स्पष्ट एवं उपयोगी है। डेविस ने अपनी विधि को मैट्रिक्स प्रविधि कहा है। इस विधि में सर्वप्रथम संपूर्ण पाठ्यवस्तुओं को प्रकरणों में बांटा जाता है। फिर प्रत्येक प्रकरण को उसके तत्वों में विभाजित किया जाता है और एक निश्चित क्रम में व्यवस्थित किया जाता है। इस प्रकार इस विधि में विश्लेषण एवं संश्लेषण दोनों प्रकार की विधियां अपनाई जाती हैं।

मैट्रिक्स प्रविधि

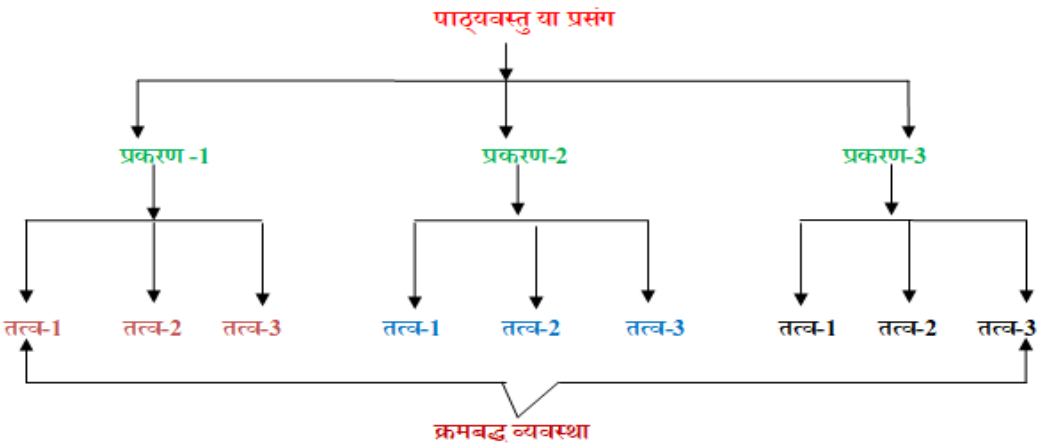

पाठ्यवस्तु विश्लेषण के स्रोत-

पाठ्यवस्तु विश्लेषण करने हेतु शिक्षक को पाठ्यवस्तु पर पूर्ण अधिकार होना चाहिए। साथ ही उसे संबंधित सभी स्रोतों को ध्यान में रखना चाहिए। इसके लिए उसे प्रामाणिक पाठ्यपुस्तकों का अध्ययन करना चाहिए। साथ ही साथ\ छात्रों की योग्यता, रुचि तथा मानसिक विकास का ध्यान रखना चाहिए। यह सभी आधार पाठ्यवस्तु विश्लेषण की क्रिया के लिये अति महत्वपूर्ण है। निम्नांकित चित्र के माध्यम से पाठ्यवस्तु विश्लेषण के कुछ प्रमुख स्रोतों को स्पष्ट किया जा सकता है।

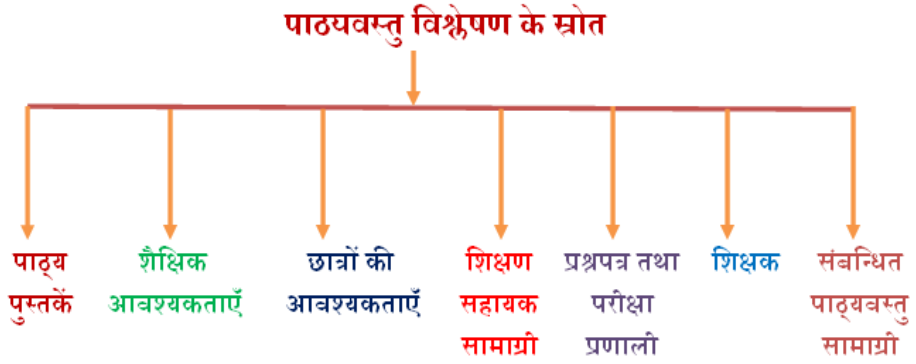

पाठ्यवस्तु के तत्वों की क्रमबद्ध व्यवस्था

पाठ्यवस्तु के तत्वों को क्रमबद्ध रूप में व्यवस्थित करने के लिए निम्न नियमों का पालन करना पड़ता है ।

- ज्ञात से अज्ञात की ओर
- धूल से सूक्ष्म की ओर
- सरल से कठिन की ओर
- अंश से पूर्ण की ओर
- अवलोकन से तर्क की ओर

शिक्षण की सफलता शिक्षण की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि शिक्षक कैसे अपनी योग्यता, सूझबूझ, कल्पना तथा सृजनशीलता का प्रयोग पाठ्यवस्तु विश्लेषण में करता है।

पाठयवस्तु के तत्वों की विशेषताएं-

1. तत्व स्वयं में पूर्ण होता है तथा छात्रों द्वारा सरलता से समझा जा सकता है।
2. तत्व को पृथक रूप से छात्रों को समझाया जा सकता है।
3. तत्व छात्रों के व्यवहार में परिवर्तन ला सकते हैं।
4. छात्रों के अनुक्रिया से पता चल जाता है कि उन्हें तत्व का ज्ञान है या नहीं ।
5. तत्व का मापन प्रश्नों के द्वारा संभव होता है।
6. छात्रों के व्यवहार से तत्व में स्तर का मापन किया जा सकता है। ज्ञान बोध चिंतन
7. तत्वों को यदि क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत किया जाय है तो किस किसी प्रत्यय विचार या तत्व का विकास किया जा सकता है।
8. पाठ्यवस्तु विश्लेषण का प्रयोग पाठ योजना निर्माण के क्षेत्र में भी किया जाता है।

इसलिए इसके विषय में निम्न परिभाषा भी प्रचलित है-

Task analysis consist of ability to analysis the objectives in tram of behavioral change in cognitive co-native and effective areas.

क्रिया विश्लेषण (job analysis)

इसे व्यवसायिक विश्लेषण भी कहा जाता है जिसमें कुछ सामाजिक तथा व्यवसायिक क्रियाओं तथा भूमिकाओं का विश्लेषण किया जाता है। जैसे- डॉक्टर के व्यवसाय का विश्लेषण

- रोग का निदान करना
- रोग का उपचार करना
- पुनर्स्थापन करना
- रोग का भावी रोकथाम करना

कौशल विश्लेषण–

किसी विशिष्ट कार्य के सफल निष्पादन हेतु विभिन्न कौशलों की आवश्यकता होती है इनका विश्लेषण ही कौशल विश्लेषण कहलाता है। जैसे एक शिक्षक के कौशलों का विश्लेषण-

- प्रश्न पूँछना
- व्याख्यान करना
- छात्रों को अभिप्रेरणा देना
- छात्रों को पुनर्बलन प्रदान करना
- स्पष्टीकरण करना
- श्यामपट्ट पर लिखना एवं छात्रों का मूल्यांकन करना इत्यादि।

इस प्रकार कार्य विश्लेषण के माध्यम से एक शिक्षक अपने शैक्षणिक उद्देश्यों को सफलता पूर्वक प्राप्त कर लेता है।